अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2021

प्रश्नपत्र – द्वितीय

प्राकृत व्याकरण एवं रचना (i)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

प्र. 1 निर्देशानुसार निम्नलिखित संज्ञा एवं सर्वनाम के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 1 x 4 = 4

(i) राअ (चतुर्थी एकवचन)

(ii) वारि (सप्तमी बहुवचन)

(iii) ता (स्त्रीलिंग – द्वितीया बहुवचन)

(iv) हरि (षष्ठी एकवचन)

प्र. 2 निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 2 x 4 = 8

(i) भण (वर्तमानकाल उत्तमपुरुष एकवचन)

(ii) वंद (विधि आज्ञा अन्यपुरुष बहुवचन)

(iii) हो (वर्तमानकाल मध्यमपुरुष एकवचन)

(iv) सुण (भूतकाल मध्यमपुरुष बहुवचन)

प्र. 3(क) निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के कृदन्त रूप लिखिए। 1 x 4 = 4

(i) सिक्ख (संबंधक भूतकृदन्त)

(ii) सोह (वर्तमानकृदन्त स्त्रीलिंग प्रथमा बहुवचन)

(iv) भुंज (विधिकृदन्त नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन)

(iv) ठा (हेत्वर्थक कृदन्त)

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से नियमित–अनियमित भूतकालिक कृदन्त छाँटकर उनके लिंग, विभक्ति और वचन बताइए।

1 x 2= 2

(i) रामेण सत्तू मुओ। (ii) मुणिणा सो भणिदो।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में से कृदन्त छाँटकर उनके नाम लिखिए और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ विभक्ति और वचन बताइए।

1 x 6= 6

(i) ससा देवं अच्चमाणा हरिसेदि।
(ii) हरिणा णरो कोक्किदो।
(iii) ताउ धावन्ता गच्छन्ते।
(iv) तुम्हेहिं पावाणि छंडिअव्वाणि।
(v) बालओ पढिदुं आगच्छदु।
(vi) पुत्ती मायं पेच्छित्ता हरिसिआ।

प्र. 4(क)निम्नलिखित वाक्यों में से स्वार्थिक प्रत्यय छाँटिए। 1 x 2= 2

(i) गुरुल्ला परमेसरं वंदिरे।
(ii) पुत्तओ बप्पं माणिस्सिदि।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में कोई एक स्वार्थिक प्रत्यय लगाकर प्रथमा विभक्ति के एकवचन और बहुवचन के रूप लिखिए।

1 x 2= 2

(i) जीव (ii) माया

प्र. 5(क) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य का परिचय दीजिए।

1 x 3= 3

(ख) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए। 1 x 5= 5

(i) तुब्भे उज्जमिहिह।

(ii) सीहेहिँ गज्जिअं।

(iii) जणेरीओ सुणुणो पालेन्ति।

(iv) जइणा सिक्खा धारिता।

(v) तुमए वत्थूणि सिंचिदव्वाणि।

(ग) निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए।

2 x 4=8

(i) बालएणं खेलितं। (कर्तृवाच्य)

(ii) अम्मि सयमु। (भाववाच्य)

(iii) मायाइ हरिसिस्सइ। (कर्तृवाच्य)

(iv) बालआ खेलन्ति। (भाववाच्य)

(घ) निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए।

1 x 4=4

(i) रहुणन्दणेण रक्खसा हणिता। (कर्तृवाच्य)

(ii) अम्हेहिं जंबू सिंचियव्वा। (कर्तृवाच्य)

(iii) राया वया पालेउ। (कर्मवाच्य)

(iv) हणुवन्तो सीयं रक्खेइ। (कर्मवाच्य)

(च) निम्नलिखित अनियमित कर्मवाच्यों से वाक्य बनाकर हिन्दी में उनके अर्थ लिखिए। 1 x 4=4

(i) बज्झइ (ii) दीसइ (iii) थुव्वइ (iv) कीरइ

प्र. 6(क)निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

1 x 15=15

(i) जब तक तुम पढोगे तब तक मैं तुमको पालूँगा।
(ii) तुम पुत्र के बिना घर मत जाओ।
(iii) प्रयास करते हुए मामा द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
(iv) कन्याओं द्वारा गीत सुना जाता है।
(v) मेरा पुत्र सुख चाहता है।
(vi) वह तृप्ति के लिए भोजन खाये।
(vii) मैं गंगा की कथा सुनूँगा।
(viii) वह परीक्षा के लिए पढ़ती है।
(ix) पत्नी वस्त्रों को धोयेगी।
(x) तुम जल को स्पर्श करो।
(xi) प्रज्ञा ज्ञान को प्रकट करती है।
(xii) ऊँट घास चरता है।
(xiii) उन सब के द्वारा जागा गया।
(xiv) कन्याएँ डरकर रुकती हैं।
(xv) धागा गलकर टूटता है।

(ख)निम्नलिखित वाक्यों की संरचना लिखिए। 3 x 5=15

(i) गिरिणो रामो पडए।
(ii) पोत्तो ताउ पणमिहिए।
(iii) गुरुणा सिक्खा पसराविअव्वा।
(iv) माया पुत्तिं णच्चेउं उट्ठेदि
(v) कण्णा णच्चन्ताउ थक्किहिन्ति।

प्र. 7(क)निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 1 x 4=4

(i) बालआ हसिदूणं खेलसु।

(ii) सीहो धेणू मारिओ।

(iii) हं वणे गच्छए।

(iv) तरुहिंतो फलो पडियं।

(ख)रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। 1 x 4=4

(i) रहुणन्दणो ....सुणइ।

(ii) णणन्दा.....................बिहइ।

(iii) तस्स माया...............गच्छेदि।

(iv) मए................................कुल्लिअव्वं।

प्र. 8 निम्नलिखित वाक्यों का पठित पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 2 x 5=10

(i) तया ते मित्ता कहिंति।

(ii) किमेत्थ आगमण–पओयणं ?

(iii) एसा दुद्धर–चरिया उवइट्ठा जणवरेहि सव्वेहिं।

(iv) भावो कहि पढमलिंगं ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं।

(v) न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया।

◇◇◇

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम परीक्षा–2021

प्रश्नपत्र – प्रथम

प्राकृत कथा एवं काव्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

प्र. 1(क)प्राकृत कथा साहित्य की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए कुवलयमाला पर टिप्पणी कीजिए। 10 x 1=10

अथवा

प्राकृत कथाओं का महत्व बताते हुए वसुदेवहिण्डि पर टिप्पणी लिखिए।

(ख)निम्नलिखित कथांशों का हिन्दी अनुवाद कीजिए। 10 x 4=40

(i) एगंमि नयरे एगो अमंगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायंसि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणा वि अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ।

(ii) एगया 'संसारो असारो, लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाणं जीवाणमाहारु' त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता सव्वणधम्मेण वासिओ कओ। एवं सासूमवि कालंतरे बोहेइ। ससुरं पडिबोहिउं सा समयं मग्गेइ।

(iii) चउरो वि ते वरा एगम्मि चेव दिणे परिणेउं आगया परोप्परं कलहं कुणन्ति। तओ तेसिं विसमे संगामे जायमाणे बहुजणक्खयं दट्ठूण

अग्गिम्मि पविट्ठा सुमइकन्ना। तीए समं णिविडणेहेण एगो वरो वि पविट्ठो। एगो अट्ठीणि गंगप्पवाहे खिविउं गओ। एगो चिआरक्खं तत्थेवि जलपूरे खिविऊण तद्दुक्खेणं मोहमहागय–गहिओ महीयले हिण्डइ। चउत्थो तत्थेव ठिओ तं ठाणं रक्खंतो पइदिणं एगमन्नपिंडं मुअंतो कालं गमेइ।

(iv) तत्थ णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं एगं पायं निच्छुभइ। तए णं ते पावसियालया तेणं कुम्मएणं सणियं सणियं एगं पायं नीणियं पासंति। पासित्ता ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जइणं वेगिइं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति।

प्र. 2(क) प्राकृत मुक्तक काव्य का स्वरूप समझाते हुए वज्जालग्गं पर टिप्पणी लिखिए। 10 x 1=10

अथवा

प्राकृत काव्य परम्परा पर प्रकाश डालते हुए गउडवहो पर टिप्पणी लिखिए।

(ख) निम्नलिखित गाथाओं का हिन्दी अनुवाद कीजिए तथा शब्दार्थ लिखिए। 10 x 4=40

(i) झायहि पंच वि गुरवे, मंगलचउसरणलोयपरियरिए।
णर–सुर–खेयर–महिए, आराहणणायगे वीरे।।

(ii) अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होइ।।

(iii) दुक्खं कीरइ कव्वं कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं।
संते पउंजमाणे सोयारा दुल्लहा हुंति।।

(iv) सत्तुमित्ते य समा पसंसणिंदाअलद्धिलद्धिसमा।
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया।।

◈◈◈